अजर अमर अविनाशी | By Kumaar Mukesh

हे महादेवा दया के सागर
अजर अमर अविनाशी तुम
धरती अम्बर और पाताल में
बसे हो घट घट वासी हो तुम
हे महादेवा .....
दया के सागर .....

महल अटारी बाँट दिए सब
आप बने शमशानी हो
दानव मानव को वर देते
आप बने महादानी हो
बना लिया पर्वत पे ठिकाना
कहलाये कैलाशी तुम
धरती अम्बर और पाताल में
बसे हो घट घट वासी हो तुम
हे महादेवा .....
दया के सागर .....

भस्म रमाये तन पे भोला
चंद्र विराजे माथे पे
गले में है सर्पो की माला
गंगा जटा बिराजे है
सब की नैया पार लगाते
हो शंकर वरदानी तुम
धरती अम्बर और पाताल में
बसे हो घट घट वासी हो तुम
हे महादेवा .....
दया के सागर .....

घट घट वासी भोले शंकर
तीन लोक के स्वामी हो
एक लोटे ही जल से प्रसन्न
हो जाते तुम त्रिपुरारी हो
जो कोई करता मन से सेवा
उसके बने सहाई तुम
धरती अम्बर और पाताल में
बसे हो घट घट वासी हो तुम
हे महादेवा .....
दया के सागर .....

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%85%e0%a4%9c%e0%a4%b0-%e0%a4%85%e0%a4%ae%e0%a4%b0-%e0%a4%85%e0%a4%b5%e0%a4%bf%e0%a4%a8%e0%a4%be%e0%a4%b6%e0%a5%80-by-kumaar-mukesh/